17 जुलाई 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन

पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि

प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 40, अंक : 8 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जुलाई (द्वितीय), 2017 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अष्टाह्निका पर्व सानन्द संपन्न

(1) दिल्ली : यहाँ अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 1 से 8 जुलाई तक श्री नियमसार महामंडल विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित निर्मलकुमारजी सिंघई सागर एवं स्थानीय विद्वान पण्डित राकेशजी शास्त्री और पण्डित संदीपजी शास्त्री द्वारा प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ मिला। दिनांक 9 जुलाई को वीर शासन जयंती के अवसर पर पण्डित निर्मलजी के प्रवचनोपरांत प्रो. सुदीपजी जैन ने भगवान महावीर के सिद्धांतों से अवगत कराया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित राकेशजी शास्त्री द्वारा कु. ईर्या जैन शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुये।

(2) मुम्बई : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 1 से 8 जुलाई तक विभिन्न उपनगरों में से सीमंधर जिनालय में ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, मलाड (ईस्ट) में पण्डित ज्ञायकजी जैन मुम्बई, बोरीवली में पण्डित मनीषजी जैन इन्दौर, भायन्दर में पण्डित गुलाबचंदजी बीना, दादर में पण्डित रमेशचंदजी बांझल इन्दौर, मलाड (वेस्ट) में पण्डित अभिनवजी शास्त्री जबलपुर, दहीसर में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, वसई में पण्डित राजेशभाई शेठ व पण्डित जिनेशभाई शेठ द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

(3) गढाकोटा (म.प्र.) : यहाँ अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर पण्डित सुरेशजी पिपरा टीकमगढ वालों द्वारा दोनों समय नियमसार ग्रंथ पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(4) ध्रुवधाम-बांसवाड़ा (राज.) : यहाँ अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर डॉ.दीपकजी जैन 'वैद्य' द्वारा प्रातःकाल समयसार, दोपहर में चरणानुयोग एवं स्वास्थ्य रक्षा तथा सायंकाल रत्नकरण्डश्रावकाचार प्रवचनों का लाभ मिला।

(5) उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर पण्डित तपिशजी शास्त्री द्वारा इन्द्रध्वज विधान करवाया गया तथा दोनों समय विधान की जयमाला पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(6) अजमेर (राज.) : यहाँ पुरानी मंडी स्थित सीमंधर जिनालय में श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री भक्तामर मंडल विधान व नंदीश्वर पंचमेरु संबंधी विशेष पूजन महोत्सव संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित आकेशजी जैन छिन्दवाड़ा द्वारा प्रातः समयसार पर प्रवचन, दोपहर में श्री जैन सिद्धांत प्रश्नोत्तरमाला की कक्षा एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित यशजी शास्त्री कोटा द्वारा श्रीमती सरोज पाण्ड्या व श्रीमती अर्चना जैन के सहयोग से संपन्न हुये।

- प्रकाश पाण्ड्या, अजमेर

आपका छोटा सा प्रयास तत्त्वप्रचार में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है

हम डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समस्त प्रवचनों का संकलन, ऑडियो सम्पादन व प्रसार कर रहे हैं।

विगत 50 वर्षों में डॉ.भारिल्ल ने विभिन्न अवसरों पर देश के विभिन्न स्थानों पर जाकर विविध विषयों पर अनेकों प्रवचन व प्रवचन शृंखलाएं संपादित की हैं। यदि आपके पास डॉ.भारिल्ल के ऐसे पुराने प्रवचनों की रिकॉर्डेड कैसेट हों तो कृपया एक कॉपी हमें भेज दें।

यदि आपके पास कॉपी करने की सुविधा उपलब्ध न भी हो तो कृपया हमें प्रवचनों के विषय, काल और स्थान की जानकारी अवश्य दें। हम उनकी कॉपी करवाने की व्यवस्था करेंगे।

उक्त सामग्री में से अनुपलब्ध सामग्री का सम्पादन व क्वालिटी संवर्धन करके हम वह सर्वसामान्य को उपलब्ध करवायेंगे।

आपका यह छोटा सा प्रयास व सहयोग महत्वपूर्ण आध्यात्मिक सामग्री जन-जन तक पहुंचाने में आपका महत्वपूर्ण सहयोग होगा।

- कार्यकारी महामंत्री, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

संपर्क सूत्र - रूपेन्द्र शास्त्री, वाट्सएप नं.- 8233372891

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-

वेबसाईट - www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

वह नौकरी तलाशते-तलाशते जब परेशान हो गया और कहीं कोई ढंग की नौकरी नहीं मिली तो वह भी 'वर्क इज वर्शिप' को याद करके मेहनत-मजदूरी करने लगा।

भले ही मेहनत-मजदूरी को लोग हल्का काम समझते हैं, इज्जत की दृष्टि से नहीं देखते; पर मेहनत-मजदूरी पराई गुलामी से तो लाखगुणी अच्छी ही है।

बस, यही सोचकर अपने मन को समझा-बुझाकर वे दोनों अपनी आजीविका आराम से कर रहे थे, पर दुर्दैव को यह भी रास नहीं आया।

जब सुनीता और सरला ने अन्नू और अज्जू के कहने पर अपने पतियों के पुराने मित्रों के नाते संजू और राजू को अपने घर में आश्रय दिया, तक तो वे कुछ समझ न सकीं कि इनको आश्रय देने का परिणाम इतना दु:खद हो सकता है। और जब समझ में आया तब तक बात बहुत आगे बढ चुकी थी, पानी सिर से गुजर चुका था। अत: अब उनका हटाना संभव नहीं रहा।

संजू और राजू के साथ रहने से अज्जू और अन्नू को भी सिगरेट और शराब पीने की आदत पड़ गई। पहले तो वे होली-दिवाली यदा-कदा शौकिया पिया करते थे, पर अब तो रोज-रोज पीने-पिलाने से व्यसन बन गया था, अत: अब पिये बिना चैन नहीं पड़ती थी। इस कारण अब उन्हें अलग-अलग करना आसान काम नहीं था।

ये दुर्व्यसन सेवन करने वाले अपने सगे माता-पिता, भाई-बहिन, पुत्र और पत्नी का साथ भले ही छोड़ दें, पर दमभाई का साथ नहीं छोड़ सकते। एक साथ बैठकर गाँजा-चरस, बीड़ी-तम्बाकू, भंग और मदिरापान करने वाले दमभाई के आगे सगे भाई की इन्हें कोई कीमत नहीं होती।

यद्यपि संजू व राजू का साथ सुनीता व सरला को ही सबसे अधिक महंगा पड़ा; क्योंकि एक तो उनके पति इनके साथ अधिक मात्रा में शराब और सिगरेट पीने से ही मौत के शिकार हुए। दूसरे इनके सम्पर्क में रहने से उनकी बदनामी हुई, सो अलग। पर वे करें तो करें भी क्या ?

पहले संजू और राजू इनकी शरण में आये और बाद में अन्नू और अज्जू उनके अनुराग में ऐसे फंसे कि अब ये स्वयं उनको छोड़ने की स्थिति में नहीं रहे। अत: सुनीता एवं सरला न चाहते हुए भी अपने पतियों को अन्नू और अज्जू से जीते जी अलग नहीं कर सकीं।

संजू और राजू को दिन-रात सुनीता व सरला के घर आते-जाते, रात-रातभर गपशप लगाते, तथा खाते-पीते और वहीं उठते-बैठते एवं सोते देखकर समाज की दृष्टि में ये दोनों तो दुराचारी बन ही गये, साथ में सुनीता और सरला भी इनकी वजह से बिना कारण बदनाम हो गई।

समाज क्या जाने इनके अंतरंग को; पर ध्यान रहे – बाप बेटे को धोखा दे सकता है, बेटा बाप को चकमा दे सकता है, पति पत्नी से झूठ बोल सकता है, पत्नी पति से बात छुपा सकती है; पर मित्र-मित्र के साथ दगा नहीं करता। चोर चोर से कुछ भी नहीं छुपाता, डाकू डाकू को कभी धोखा नहीं देता, जुआरी जुआरी के साथ कभी बेईमानी नहीं करता; व्यापारी वर्ग में यह कौन नहीं जानता कि नम्बर दो का करोड़ों का धन्धा केवल परस्पर के विश्वास के भरोसे ही चलता है। पक्की लिखा-पढी करने वाले भले ही फेल हो जाएँ, पर ये लोग आज तक तो कभी फेल होते देखे नहीं गये।

इसी तथ्य के आधार पर छाती ठोककर यह कहा जा सकता था कि संजू और राजू का व्यवहार सरला और सुनीता के साथ भाई-बहिन के पवित्र प्रेम की तरह था, उन्होंने उन्हें कभी भी बुरी निगाह से देखा तक नहीं था; क्योंकि अब वे उनकी प्रेमिकाएं नहीं, बल्कि मित्रों की पत्नियाँ जो थीं।

पर, समाज को कौन समझाये कि ये पवित्र हैं और समाज भी ऐसे कैसे मानता कि इन्होंने ऐसा कोई पाप नहीं किया। समाज का सोचना एक अपेक्षा से सच भी है; क्योंकि काजल की कोठरी में रहकर कोई उसके दाग से कैसे बच सकता है ?

पर वे भी क्या करें ? उनके पास सीता सती जैसा कोई अग्निपरीक्षा देने का उपाय भी तो नहीं है। वे सीताजी जैसा साहस कर भी नहीं सकती थीं; क्योंकि संभव है सीताजी जैसी पवित्रता होने पर भी सीताजी जैसा पुण्य उनके पास न हो और अग्नि का जल पवित्रता से नहीं पुण्य से होता है, अन्यथा पवित्रता तो पाँचों पाण्डवों के भी कम नहीं थी।

पाँचों ही पाँडव पंच महाव्रत के धारी थे, जिनमें तीन तो तद्भव मोक्षगामी भी थे। उनको भी अग्नि से तप्त लाल-लाल दहकते लोहे के गहने पहना दिये गये थे। समझ लो कि उनके पास सीता जैसा पुण्य नहीं था, पवित्रता तो सीता से भी अनन्तगुणी अधिक थी। इसके सिवाय और कोई उपाय था नहीं। अत: चुपचाप बदनामी सहने में ही उन्हें सार दिखाई दिया।

पर, समाज भी तो आखिर समाज ही है, वह कब पीछे रहने वाला था। अन्नू और अज्जू के दिवंगत होने पर जैसे-जैसे ज्ञान, विज्ञान और विद्या ने उन्हें सन्मार्ग में लगाकर शान्ति से धर्मसाधन करते हुए गौरव से जीने को तैयार किया, वैसे-वैसे ही समाज ने उनका विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। उनका बहिष्कार करने तक की योजना बन गई।

औरत औरत की जितनी बड़ी शत्रु होती है, शायद उतना बड़ा शत्रु उसका और कोई नहीं हो सकता।

औरतों की ओर से कानाफूसी प्रारम्भ हो गई -'साँच को आँच कहाँ।' यदि सती हैं तो हाथ में आग के अंगारे लेकर दिखाये। अपने आप दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा।

समाज के संरक्षक सेठ सिद्धोमल भी औरतों का रुख देखकर उनकी हाँ में हाँ भरने लगे। उन्हें उधर झुकता देख समाज के अध्यक्ष, मंत्री आदि पदाधिकारियों का मत भी उन्हें ही मिल गया।

इस तरह एक ऐसा माहौल बन गया, मानो अग्नि परीक्षा दिये बिना समाज में उनका जिन्दा रहना असंभव हो जायेगा।

संजू और राजू भी यह सब तमाशा देख रहे थे। यद्यपि संजू भी सामाजिक नेताओं के तीर का निशाना बन सकता था, पर बड़े बाप का बेटा होने से उसकी तरफ अंगुली उठाने की किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी।

संजू से चुप नहीं रहा गया, अत: वह समाज के सामने आता हुआ बोला-''चलो हमें मंजूर है सुनीता और सरला की अग्नि परीक्षा। और उन्हें दोषी बनाने में उनसे भी कहीं अधिक हमारा दोष है। अ: उनसे पहले हम भी अपनी अग्नि परीक्षा देंगे।''

यह सुनते ही संजू के पिता सेठ सिद्धोमल घबड़ाये। अब उन्होंने पैंतरा बदलने की कोशिश की; पर संजू ऐसा अड़ा कि पलटने का नाम ही न ले। अब सबकी बोलती बन्द। पर संजू ने पुन: घोषणा की कि कल इसी समय यहीं पर अग्नि परीक्षा का कार्यक्रम होगा।

रातभर हलचल मची रही, इस कार्यक्रम के निरस्त करने की नाना योजनायें बनती रहीं। सरला व सुनीता की हर बात मानने को समाज राजी हो गया, पर संजू और राजू अपनी बात पर अड़े रहे।

उनका कहना था कि जब सुनीता व सरला - दोनों ही पूर्ण पवित्र हैं, तो फिर वे किसी की कृपा-पात्र क्यों बनें ? जीवनभर औरतों द्वारा टीका-टिप्पणी की निशाना क्यों बनी रहें ? एक बार अग्नि परीक्षा में खरी उतरकर क्यों न समाज में गौरव से और इज्जत से रहें ? अत: उन्होंने किसी की कोई बात नहीं मानी।

अन्ततोगत्वा, सवेरा होने पर अग्निपरीक्षा की तैयारियाँ प्रारम्भ हुईं। अग्नि की भट्टी जला दी गई; पर सीता की अग्निपरीक्षा से इस अग्निपरीक्षा की कार्यशैली में थोड़ा बहुत सुधार हो गया था, सीताजी को तो अग्निकुण्ड में प्रवेश करना पड़ा था, पर यहाँ आग के अंगारों को केवल हाथों में लेना था; ताकि पापी का पाप तो खुल जाये और जान जोखिम में न पड़े। काश ! उस जमाने में भी कोई ऐसा ही उपाय सोच लेता तो ....। खैर !

(क्रमश:)

समयसारमय हो जग सारा

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित '**समयसारमय हो जग सारा**' योजना के अन्तर्गत दिनांक 1 से 8 जुलाई तक अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर अनेक स्थानों पर श्री समयसार महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

(1) मेरठ (उ.प्र.) : यहाँ शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अभयजी द्वारा पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा के सहयोग से संपन्न हुये। **- सौरभ जैन, मेरठ**

(2) भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ श्री सीमंधर जिनालय देवनगर में पण्डित निखिलजी शास्त्री द्वारा प्रवचन का लाभ मिला। इस अवसर पर प्रात:काल पण्डित विजयजी शास्त्री और पण्डित सिद्धार्थजी शास्त्री द्वारा पूजन-विधान एवं दोपहर व रात्रि में कक्षाओं का आयोजन किया गया।

- पुष्पेन्द्र जैन, भिण्ड

(3) छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ गोलगंज स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में विधान का आयोजन हुआ। तत्पश्चात् डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा विधान की जयमाला पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में पण्डित अशोकजी 'वैभव' द्वारा प्रवचन हुये। **- अशोक जैन 'वैभव', छिन्दवाड़ा**

क्या हम सही मार्ग पर हैं ?

सत्य क्या है ? (4)

जो सभी एक दूसरे से भिन्न व परस्पर विरुद्ध हैं, वे सभी तो सच हो नहीं सकते हैं न !

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

विगत अंक में हमने पढा कि क्यों नहीं हम स्वविवेकपूर्वक अपनी धार्मिक-आध्यात्मिक विचारधारा का चुनाव करते हैं।

मैं एक बार फिर वही सवाल दोहराना चाहता हूँ कि **यदि धर्म और आध्यात्मिक विषयों पर अपनी आस्था स्वपरीक्षित होनी चाहिये, मात्र परम्परा पर आधारित नहीं, तो क्यों हम (सर्वसामान्यजन) ऐसा नहीं करते हैं?**

कहने को तो हम मनुष्य बुद्धिजीवी प्राणी हैं और आज का युग भी बुद्धिवादी युग है, पर हमें अपने सम्पूर्ण जीवन में इस बात के चिन्ह व प्रमाण मात्र कभी-कभी ही दिखाई देते हैं कि जब हमारी शोधबुद्धि जाग्रत हुई हो। अन्यथा हमारा सम्पूर्ण जीवन मात्र परम्परा से सुनी-जानी हुई धारणाओं के साथ ही बीत जाता है, हमें उनकी परीक्षा करने का विचार ही नहीं आता है।

मात्र कुछ ही ऐसे विशिष्ट लोग होते हैं जो लीक से हटकर सोचने और करने की क्षमता रखते हैं। ऐसे लोग दुर्लभ लोगों की श्रेणी में आते हैं।

हम स्वयं तो लीक से हटकर सोचते ही नहीं हैं पर हमारा दुर्भाग्य है कि ऐसे दुर्लभ लोगों में से भी अधिकतम लोग ऐसे होते हैं जो अपने मौलिक विचारों के कारण जीवनभर समस्त मानव समाज की ओर से जबर्दस्त प्रतिरोध का सामना करते हुए तिरस्कृत सा जीवन व्यतीत करते हैं व स्वयं समाज को कोई नया विचार या दिशा नहीं दे पाते हैं; क्योंकि लकीर के फकीर जनसमूह से मिलकर बना हुआ समाज उनके शोध-खोज भरे विचारों को स्वीकार ही नहीं कर पाता है और इसप्रकार उनकी शोध और प्रतिभा का लाभ लेने से अपने आपको वंचित ही कर लेता है।

उक्त दुर्लभ लोगों में से मात्र कुछ ही ऐसे दुर्लभतम लोग इतने प्रभावशाली होते हैं जो समाज को और युग को अपने विचारों से प्रभावित करके एक नई दिशा देने में सक्षम हो पाते हैं।

दुनिया के अधिकतम लोग तो ऐसे होते हैं जो न तो स्वयं ही लीक से हटकर सोच सकते हैं और न ही ऐसे किसी विचारक का समर्थन और अनुसरण कर पाते हैं। इनमें भी अधिकतम लोग तो ऐसे होते हैं जो उन नये विचारों के प्रतिरोध या विरोध में भी शामिल नहीं होते हैं; क्योंकि वे उनसे परिचित ही नहीं होते हैं, क्योंकि वे उनके प्रति जागरूक व संवेदनशील ही नहीं होते हैं।

अनादिकाल से आज तक ऐसा कौन व्यक्ति होगा जिसने फलों को पेड़ से टूटकर जमीन पर गिरते हुए नहीं देखा होगा?

सभी ने देखा है और मात्र एकाध बार नहीं, रोज ही दिन में कई बार ऐसा होता है जब कोई वस्तु हाथ से छूटती है तो नीचे गिरती है, पर न्यूटन से पहले (और उसके बाद भी) किसे यह विचार आया कि आखिर ऐसा क्यों होता है?

छोड़िये दूसरों की बात, क्या आपके मन में ऐसा विचार कभी आया?

क्यों नहीं आया?

क्योंकि हम तो ज्ञानी हैं न! हम तो जानते हैं ना कि **ये तो ऐसा ही होता है।**

आखिर इसमें सोचने-विचारने और माथा खपाने की जरूरत ही क्या है?

इतना ही नहीं, अगर कोई व्यक्ति हमारे समक्ष ऐसी बातें करे, ऐसा सवाल प्रस्तुत करे तो हम सभी उसके मानसिक स्वास्थ्य के प्रति सशंकित हो उठेंगे, हम उसे पागल करार देने में भी हिचकेंगे नहीं।

जरा कल्पना कीजिये कि आपका करीबी कोई व्यक्ति हैरान-परेशान सा, अपने आपमें खोया हुआ, गुमसुम सा एक कोने में चुपचाप बैठा हो, उसे परेशान देखकर आप उससे पूछें कि भाई! क्या बात है, इतने परेशान क्यों हो? क्या मैं आपकी कोई मदद कर सकता हूँ? स्वाभाविक है कि पहले तो वह ना-नुकर ही करेगा; क्योंकि वह बहुत अच्छी तरह जानता है कि उसकी समस्या का समाधान उसके सवाल का जवाब आपके पास नहीं है। फिर भी यदि वह आपके वात्सल्यपूर्ण आग्रह को ठुकरा न सके और पूछ बैठे कि पेड़ से टूटकर कोई फल नीचे ही क्यों गिरता है, ऊपर क्यों नहीं जाता है? तो आपकी प्रतिक्रिया क्या होगा?

आप उसके सवाल का जवाब देंगे? देने की आवश्यकता भी समझेंगे? या उसे बहला-फुसलाकर किसी बहाने से तत्काल पागलखाने ले जाने की कोशिश करेंगे?

ऐसा क्यों?

कया वह पागल हो गया है?

यदि ऐसा है तो क्या न्यूटन भी पागल था?

यदि न्यूटन के दिमाग में यह सवाल न आया होता, यदि न्यूटन इस सवाल से ऐसा ही परेशान न हो गया होता, यदि न्यूटन और सब काम छोड़कर, खाना-पीना भूलकर इस सवाल का जवाब पाने में न जुट गया होता तो क्या हमें गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत मिल पाता?

यदि न्यूटन पागल नहीं था तो हमें अपना वह करीबी जो ऐसे सवालों से बोझिल है और उनके जवाब खोजने में व्यस्त है, पागल सा क्यों लगता है?

पागल वह है या हम, जो कि इतना भी नहीं जानते हैं और नहीं जानते हुए भी हमें कोई फर्क ही नहीं पड़ता है। इस और ऐसे ही अनेकों

सवालों का जवाब पाए बगैर ही हम अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर देते हैं और जैसे के तैसे यहाँ से चले जाते हैं।

क्या आप जानते हैं या जानना चाहते हैं कि हम ऐसे क्यों हैं, हम ऐसे कैसे हो गये हैं? हमें किसने ऐसा बनाया है?

तथ्य तो यह है कि हम मूलभूत रूप से ऐसे नहीं थे, हमें बलात् ऐसा बनाया गया है, वह भी हमारे अपनों के द्वारा ही, हमारे हितैषी और शुभचिंतकों के द्वारा ही। हमारे अपने माता-पिता, भाई-बन्धु और मित्रों के द्वारा ही।

क्या कहा, विश्वास नहीं होता, ऐसा नहीं हो सकता है?

अभी विश्वास हो जायेगा।

क्या आपके बच्चे आपसे ऐसे सवाल नहीं पूछते हैं, क्या आपके बच्चों ने आपसे कभी ऐसे सवाल नहीं पूछे हैं?

आपने उन्हें क्या जवाब दिया?

क्या जवाब देते?

आपके पास जवाब होता तो आप उसे जवाब देते न!

यदि आपको आपके पिता ने इस सवाल का जवाब दिया तो आज आप अपने बच्चों के सामने निरुत्तर होने के लिये विवश न होते।

अब आज जब आपके बच्चे आपसे ऐसे सवाल पूछते हैं तो आप भी उनके साथ वही करते हैं जो आपके परिजनों ने आपके साथ किया था।

या तो आप उन्हें और उनकी बातों को नजरअंदाज कर देते हैं और उन पर ध्यान ही नहीं देते हैं, उन्हें झिड़ककर चुप कर देते हैं कि बहुत माथा खाता है या फिर बहुत हुआ तो कह देते हैं कि यह ऐसा ही होता है।

इसप्रकार अनादिकाल से आज तक अपने अज्ञान के पोषण और संरक्षण की हमारी यह परम्परा निर्बाध चली आ रही है।

हम ऐसे प्रश्न पूछने वाले अपने उन बच्चों को अबोध, भोला व अज्ञानी कहते और मानते हैं। हम ऐसा मानते हैं कि ऐसे सवाल सिर्फ भोले लोग ही पूछ सकते हैं।

सच्चाई तो यह है कि **वे बच्चे अज्ञानी हैं और उन्हें अपने आपको अज्ञानी मानने और दिखने में कोई झिझक भी नहीं है, इसलिये वे अपने अज्ञान को छिपाते नहीं अपितु प्रकट करके ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।**

मूलत: हम सभी ऐसे ही थे पर जाने-अनजाने ही हमारे अपने लोगों ने ही हमें अपने स्वभाव से भ्रष्ट करके ऐसा बना दिया जो आज हम हैं।

बड़े होकर **हमने यह तरक्की कर ली कि हम अपने अज्ञान को संगृहीत करना, पोषित करना और छिपाना सीख गये हैं।**

अब हमें ज्ञानी होने में नहीं ज्ञानी दिखने में ज्यादा रुचि है। हमें अपना अज्ञान भगाने में नहीं अज्ञान छिपाने में ज्यादा रुचि है।

हम अपना भोलापन छोड़कर स्मार्ट नहीं हुए, पाखंडी हो गये हैं। अब हम हैं तो अज्ञानी पर ज्ञानी दिखना चाहते हैं।

बच्चे अपना अज्ञान प्रकट करके ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करते हैं और हम अपना अज्ञान छिपाने के प्रयासों में जीवनभर अज्ञानी बने रहते हैं।

क्या अब भी आपको नहीं लगता है कि यदि हम अब भी बच्चे ही बने रहते, हमें अपने अज्ञानी होने की सच्चाई को स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होता, प्रकट करने में शर्म नहीं आती और सच जानने की हमारी जिज्ञासा बच्चों के समान ही प्रबल, निश्छल होती तो हम इस जीवन में कुछ उपलब्ध कर पाते।

न्यूटन ने हमारी तरह यह गलती नहीं की थी, इसलिये वह गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की खोज कर सका। जो काम न्यूटन ने भौतिकी के क्षेत्र में किया क्या वही काम हमें अध्यात्म के क्षेत्र में करने की आवश्यकता नहीं है?

क्या हम अब भी अपने अज्ञ पूर्वज-वंशजों की संसार का विस्तार करने वाली परम्परा का ही पालन-पोषण और विस्तार करते रहेंगे या सच्चे वस्तुस्वरूप के अन्वेषक, उद्घाटक, प्रवक्ता और प्रसारक तीर्थंकर-गणधर देवों और मोक्षमार्गी, आत्मानुभवी, निर्ग्रंथ आचार्यों की परम्परा का अनुसरण करते हुए विवेकपूर्वक वस्तुस्वरूप की स्वविवेक से परीक्षा करके स्वीकार करके आत्मान्वेषण के मार्ग पर आगे बढ़ेंगे?

निर्णय आपका है। **(क्रमश:)**

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

40वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 23 जुलाई से मंगलवार 1 अगस्त, 2017 तक)

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

शिविर में पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

संपर्क सूत्र - पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन : 0141-2705581, 2707458

आगम के आलोक में -

समाधिमरण या सल्लेखना

3

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

अकेले शरीर को कृष करना ही सल्लेखना नहीं है, अपितु शरीर के साथ-साथ कषायों को कृश करना भी आवश्यक है।

सम्यक् काय कषाय लेखना सल्लेखना[१] - आचार्य पूज्यपाद के इस कथन के अनुसार शरीर और कषायों को भलीभाँति कृश करना ही सल्लेखना है।

सागारधर्मामृत में पण्डित आशाधरजी लिखते हैं -

''उपवासादिभिः कायं कषायं च श्रुतामृतैः।
संलिख्य गणमध्ये स्यात् समाधिमरणोद्यमी॥१५॥

समाधिमरण के लिए प्रयत्नशील साधक उपवास आदि के द्वारा शरीर को और श्रुतज्ञानरूपी अमृत के द्वारा कषाय को सम्यक् रूप से कृश करके चतुर्विध संघ में उपस्थित होवे। अर्थात् जहाँ चतुर्विध संघ हो वहाँ चला जाये।''

उक्त छन्द में शरीर को कृश करने का उपाय उपवास आदि को और कषायों को कृश करने का उपाय श्रुताभ्यास (स्वाध्याय) को बताया है साथ में चतुर्विध (मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका) संघ के सत्समागम में रहने को कहा है।

इससे यह स्पष्ट है कि - यह सब कथन घर में रहनेवाले व्रती श्रावकों का ही है।

''जन्ममृत्युजरातङ्काः कायस्यैव न जातु मे।
न च कोऽपि भवत्येष ममेत्यङ्गेऽस्तु निर्ममः॥[२]

जन्म, मृत्यु, बुढ़ापा और रोग शरीर में ही होते हैं, मुझ (आत्मा) में नहीं। अतः मुझे इस शरीर में निर्मम होना चाहिये।

पिण्डो जात्याऽपि नाम्नाऽपि समो युक्त्याऽपि योजितः।
पिण्डोऽस्ति स्वार्थनाशार्थो यदा तं हापयेत्तदा॥[३]

पिण्ड शरीर को भी कहते हैं और भोजन को भी। इसप्रकार शरीर और भोजन में जाति और नाम दोनों से समानता है; फिर भी आश्चर्य है कि अबतक शरीर को लाभ पहुँचाने वाला भोजन, अब शरीर को हानि पहुँचाता है; इसलिये भोजन का त्याग ही उचित है।''

उक्त कथन से अत्यन्त स्पष्ट है कि जब भोजन शरीर को पोषण न देकर शरीर का शोषण करने लगे, शरीर को नुकसान पहुँचाने लगे; तब उसका त्याग करना चाहिये।

ध्यान रहे यहाँ यह कहा जा रहा है कि **जब भोजन शरीर को नुकसान पहुँचाने लगे, उसका त्याग तब करना चाहिये।**

महाशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र में भी आचार्य उमास्वामी ने अणुव्रतधारी श्रावकों को मुख्यरूप से व अन्य मुमुक्षु भाई-बहिनों को गौणरूप से आदेश दिया है, उपदेश दिया है कि-

''मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता॥[१]

मरणकाल उपस्थित होने पर सल्लेखना (समाधिमरण) व्रत का श्रावकों को प्रीति पूर्वक सेवन करना चाहिए।''

उपसर्गादि के होने पर तो सल्लेखना होती ही है। सहज मृत्युकाल उपस्थित होने पर जीवन के अन्त में भी सल्लेखना धारण करना आवश्यक है।

आचार्य अमृतचन्द्र देव अपने पुरुषार्थसिद्ध्युपाय नामक श्रावकाचार में इस बात पर विशेष बल देते हैं कि यह सल्लेखना नामक व्रत ही एक ऐसा व्रत है कि जो तेरे धर्मरूपी धन को अगले भव में ले जावेगा।

यद्यपि यह सल्लेखना नामक व्रत जीवन के अन्त में लिया जाता है; तथापि इस व्रत को लेने की भावना बहुत पहले से रखी जा सकती है और रखी जानी चाहिये।

अतः यह न केवल मृत्यु को सुगंधित करने वाला व्रत (कार्य) है, परन्तु यह जीवन को भी भावना के बल पर सुगन्धित कर देता है।

उक्त कथन करने वाले छन्द मूलतः इसप्रकार हैं -

''इयमेकैव समर्था धर्मस्वं मे मया समं नेतुम्।
सततमिति भावनीया पश्चिमसल्लेखना भक्त्या॥
मरणान्तेऽवश्यमहं विधिना सल्लेखनां करिष्यामि।
इति भावनापरिणतोऽनागतमपि पालयेदिदं शीलम्॥[२]

यह सल्लेखना ही एकमात्र ऐसा व्रत है, जो मेरे धर्म को

१. सर्वार्थसिद्धि अध्याय-७, सूत्र २२ की टीका में समागत।
२. धर्मामृत (सागार) आठवाँ अध्याय, छन्द १३
३. वही, छन्द १४

१. तत्त्वार्थसूत्र, अध्याय-७, सूत्र २२
२. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय छन्द-१७५-१७६

अगले भव में ले जाने में समर्थ है; अतः निरन्तर इसकी भावना करना चाहिये।

मैं मरण के समय अवश्य ही सल्लेखना धारण करूँगा – ऐसी भावना रखकर ज्ञानी जीव मरण समय के पहले ही इस व्रत का लाभ ले लेता है।''

देह तो पुद्‌गलपरमाणुओं का पिण्ड है। पुद्‌गल परमाणु तो समय आने पर यहीं बिखर जावेंगे, पर मैं तो अनादि अनन्त अविनाशी तत्त्व हूँ; अतः मैं तो अगले भव में भी रहने वाला हूँ। मेरा धर्म भी मेरे साथ रहने वाला है। अतः हमें देह के बारे में, धन-सम्पत्ति के बारे में न सोच कर अपने आत्मतत्त्व के बारे में सोचना चाहिये, अपने आत्मतत्त्व की संभाल में ही सावधान होना चाहिये।

उक्त छन्दों में आचार्य अमृतचन्द्र हमें यही आदेश देना चाहते हैं, यही उपदेश देना चाहते हैं।

इस सल्लेखना व्रत का वर्णन श्रावकाचारों में आता है। दूसरी प्रतिमा में १२ व्रतों की चर्चा के उपरान्त इसका निरूपण होता है।

पण्डित प्रवर आशाधरजी भी इस सल्लेखना व्रत की चर्चा अनगार धर्मामृत में न करके सागारधर्मामृत में करते हैं। सातवें अध्याय में व्रती श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओं का वर्णन करने के उपरान्त आठवें अध्याय में सल्लेखना की बात करते हैं। **(क्रमशः)**

दशलक्षण महापर्व हेतु सूचना

● दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण-पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके। पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई-मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

● अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण-पत्र तत्काल भिजवायें।

संपर्क सूत्र – **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.- 0141-2705581, 2707458,**
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड
श्री टोडरमल स्मारक भवन
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)
ग्रीष्मकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2017

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
रविवार 13 अगस्त 2017	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड -प्रथम वर्ष
सोमवार 14 अगस्त 2017	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड -द्वितीय वर्ष 10. विशारद द्वितीय खण्ड -प्रथम वर्ष
मंगलवार 15 अगस्त 2017	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (मौखिक) 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड -द्वितीय वर्ष

नोट – (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

– विनीत शास्त्री (प्रबन्धक-परीक्षा बोर्ड)

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की -

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों की वाग्पटुता हेतु साप्ताहिक गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में रविवार, दिनांक 2 जुलाई को 'हम और हमारा महाविद्यालय' विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं सभी शिक्षकगण उपस्थित थे।

शनिवार, दिनांक 8 जुलाई को सत्र के प्रारम्भ में गोष्ठी की उद्घाटन सभा हुई, जिसमें सभी शिक्षणगणों के अतिरिक्त राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के एचओडी श्री अनिलकुमारजी एवं उद्योगपति श्री प्रकाशचंदजी उपस्थित थे।

गोष्ठी का परिचय पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने दिया। छात्रों के वक्तृत्व के विकास के लिये श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अनिलकुमारजी एवं श्री प्रकाशचंदजी ने मार्गदर्शन दिया।

रविवार, दिनांक 9 जुलाई को पण्डित नीतेशजी शास्त्री की अध्यक्षता एवं श्री अनिलकुमारजी के मुख्य आतिथ्य में वीरशासन जयंती के पावन प्रसंग पर 'वीर शासन जयंती' विषय पर गोष्ठी आयोजित की गई। वक्तागणों द्वारा दिगम्बरत्व की सनातन रीति पर अत्यंत सुन्दर चिन्तन प्रस्तुत किया गया। गोष्ठी में स्वानुभव जैन (उपाध्याय कनिष्ठ), सजल जैन (शास्त्री प्रथमवर्ष) एवं चैतन्य मांगुलकर (शास्त्री प्रथमवर्ष) को श्रेष्ठ वक्ता के रूप में चयनित किया गया।

गोष्ठी एवं उद्घाटन सभा में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जिनकुमारजी शास्त्री, गौरवजी शास्त्री, अच्युतकांतजी शास्त्री, जिनेन्द्रजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल, कु.प्रतीति पाटील आदि विद्वत्गण उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संयोजन व संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों द्वारा किया गया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

दशलक्षण पर्व हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों से अनुरोध है कि वे इस वर्ष भी दशलक्षण पर्व में जाने हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र जयपुर कार्यालय को पत्र/फोन/ई-मेल द्वारा भेजें। यद्यपि सभी विद्वानों को जयपुर कार्यालय से अनुरोध पत्र डाक, एस.एम.एस./वॉट्सएप द्वारा भेजे जा रहे हैं; परन्तु यदि डाक की गड़बड़ी से समय पर न मिले हो तो भी अपनी स्वीकृति हमें शीघ्र नोट करा देवें। **- महामंत्री**

स्वीकृति भेजने का पता - **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.-0141-2705581, 2707458, मो. 9785643202 (पीयूष जैन) E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

समयसार पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन अब whatsapp पर भी

आपको यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता होगी कि अब आप ग्रंथाधिराज समयसार पर डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन नियमित सुन सकते हैं। दिनांक 1 जुलाई 2017 से प्रतिदिन whatsapp पर क्रमश: एक प्रवचन भेजा जा रहा है।

आप भी यदि अपने whatsapp पर प्रवचन प्राप्त करना चाहते हैं तो कृपया हमारा whatsapp नम्बर **7297973664** को PTST प्रवचन के नाम से अपने मोबाइल में SAVE कर लें और आप अपना नाम व स्थान लिखकर हमें whatsapp पर भेज दें।

हम आपका नम्बर हमारी प्रवचन लिस्ट में जोड़ लेंगे। ध्यान रहे कि यदि उक्त नम्बर 7297973664 आपके मोबाइल में SAVE नहीं होगा तो हम जो प्रवचन भेजेंगे वह आपको प्राप्त नहीं होगा। यदि आप अपने परिवार के अन्य सदस्यों को भी प्रवचन की सुविधा देना चाहते हैं तो उन्हें भी यह नम्बर SAVE कराकर हमें उनका नम्बर लिस्ट में जोड़ने हेतु whatsapp पर भेज दें। **- पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर**

छात्र प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.) की ग्रीष्मकालीन परीक्षा दिनांक 13, 14 व 15 अगस्त 2017 में होने जा रही है। संबंधित सभी परीक्षा केन्द्रों को खाली प्रवेश फार्म डाक से भेजे जा चुके हैं; अत: शीघ्रातिशीघ्र छात्र प्रवेश फार्म भरकर भिजवा देवें।

कदाचित खाली छात्र प्रवेश फार्म डाक की गड़बड़ी से उपलब्ध नहीं हुए हों तो परीक्षा बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क कर तत्काल मंगा लेवें।

- विनीत शास्त्री (प्रबंधक-परीक्षा विभाग)

प्रकाशन तिथि : 13 जुलाई 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com